278 नवम्बर 2009

बाल विज्ञान पत्रिका

चकमक

इस अंक में

2 यदि धरती पर स्वर्ग है तो...

6 दस पुरानी चीज़ें

11 एक था रामू

18 माइहाउगेन का वो म्यूज़ियम...

20 शिक्षकों की कलम से...

24 चित्रों का होमवर्क

35 कुत्ते का क्या हुआ?

40 एक शरारत

और ढेर सारे मेरे पन्ने...

33

अब जाना कि पढ़ाई क्या होती है? अब मैं फिर से पढ़ रही हूँ। फिर से दसवीं की परीक्षा दूँगी।

18

हम लोग साँय-साँय करते पेड़ों की धूप-छाँव और पक्षियों के कलरव से घिरी हुई एक ऐसी विशाल जगह में प्रवेश कर चुके थे जहाँ कुछ भी “आधुनिक” नहीं था।

11

दरवाज़ा खटखटाने की आवाज़ आई। मैंने कोठरी खोली तो देखा कि कुत्ता दरवाज़े पर था।

31

बूढ़ी माँ, बूढ़ी माँ कई ढूँढे!

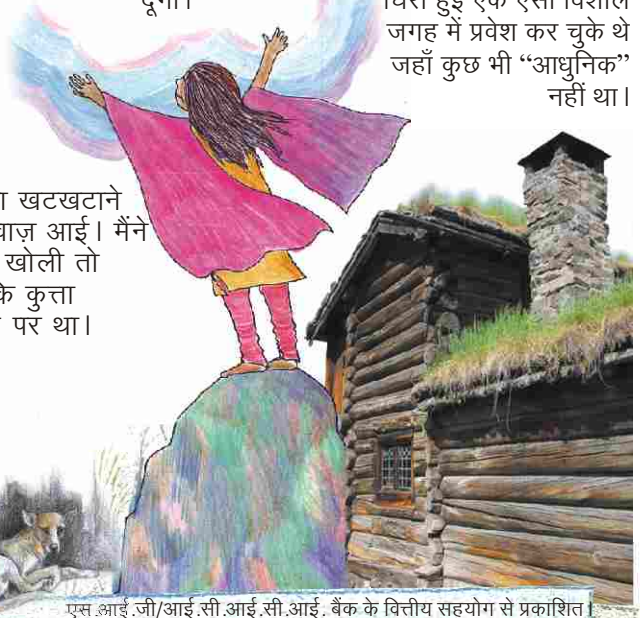

एस.आई.जी/आई.सी.आई.सी.आई. बैंक के वित्तीय सहयोग से प्रकाशित।

आवरणः निशा जाट (शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र, मनासा, देवास), प्रीति अहिरो (तीसरी), अभिजीत

सम्पादन
सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

सहायक सम्पादक
कविता तिवारी

सम्पादकीय सलाहकार
रेक्स डी रोज़ारियो
तेजी ग्रोवर

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

डिज़ाइन
दिलीप चिंचालकर

वितरण
विजय झोपाटे

सहयोग
मिहिर
कनक
प्रभात
कमलेश यादव

सदस्यता शुल्क
एक प्रतिः 20.00
वार्षिकः 200.00 (व्यक्तिगत)
300.00 (संस्थागत)
तीन सालः 500.00 (व्यक्तिगत)
700.00 (संस्थागत)
आजीवनः 3000.00 (व्यक्तिगत)
4000.00 (संस्थागत)

सभी डाक खर्च हम देंगे। चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चैक से भेज सकते हैं।

एकलव्य
ई-10, शंकर नगर,
बीडीए कॉलोनी,
शिवाजी नगर भोपाल,
म.प्र. 462 016
फोनः (0755) 2671017,
2550976, 6549033
फैक्सः (0755) 2551108
chakmak@eklavya.in
circulation@eklavya.in